सत्यमेव जयते

Central Adoption Resource Authority
केन्द्रीय दत्तक–ग्रहण संसाधन प्राधिकरण

(A Statutory Body of Ministry of Women & Child Development, Government of India)
(भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की सांविधिक निकाय)

CARA

No. 63–36 / 2018 / डिस्ट्रप्शन / कारा / एमपी Date. 03 / 10 / 2019

परामर्शी सूचना

विषयः दत्तकग्रहण के संबंध में गृह अध्ययन रिपोर्ट (एचएसआर) की तैयारी एवं संभावित दत्तकग्राही माता–पिता (पीएपी) के परामर्श हेतु दिशा–निर्देश

सेवा में,
समस्त राज्य दत्तक ग्रहण संसाधन अभिकरण,
समस्त जिला बाल सरक्षण एकक,
समस्त विशिष्ट दत्तक ग्रहण अभिकरण

संभावित दत्तकग्राही माता–पिता (पीएपी) को परामर्श देना एवं गृह अध्ययन रिपोर्ट (एचएसआर) तैयार करना किसी बच्चे को गोद लेने की प्रक्रिया का अत्यंत संवेदनशील हिस्सा होता है। यह केवल प्रश्नोत्तर सत्र नहीं होता है अपितु जानकारी साझा करने की द्वीस्तरीय प्रक्रिया भी है जो संभावित माता–पिताओं को अभिभावक बनने के लिए तैयार करेगी।

गृह अध्ययन दौरा विशेषीकृत दत्तक ग्रहण अभिकरण के लिए एक ऐसा अवसर भी है जिससे वे संभावित दत्तक माता–पिता की उपयुक्तता और उत्सकुता जान सकें। चर्चा के माध्यम से जैविक बच्चो से विहीन दत्तक माता पिता को भावनात्मक रूप से सशक्त करना भी एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। निम्नलिखित बिन्दुओ को ध्यान मे रख कर गृह अध्ययन दौरा करे एवं रिपोट तैयार करे :

क) गृह अध्ययन रिपोट संभावित दत्तक ग्राही माता पिता की बच्चे को गोद लेने की उपयुक्तता एवं उत्सुकता के आकलन करने हेतु तैयार की जाती है।

ख) गृह अध्ययन रिपोर्ट तैयार करने वाले व्यक्ति की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह तथ्यात्मक जानकारी से आगे जाकर यह समझे कि आंकलन के दौरान उसे क्या दिखाई दे रहा है। आदर्श रूप से, संभावित दत्तक माता–पिता का केवल साक्षात्कार ही नहीं बल्कि एक से अधिक बार घर का दौरा किया जाना चाहिए।

ग) सबसे पहला कदम "मेल–जोल बढ़ाने" एवं यह सुनिश्चित करने का होना चाहिए कि संभावित दत्तक माता–पिता दो–तरफा परिचर्चा में शामिल होने के लिए तैयार है।

घ) गृह अध्ययन करने वाले सामाजिक कार्यकर्त्ता को हर समय "बच्चे पर केंद्रित" रहना है। यह अध्ययन बच्चे की जरूरतों के बारे में है न कि माता–पिता की जरूरतों के बारे में। *ऐसा बच्चा जिसे एक घर की जरूरत है के लिए एक उपयुक्त परिवार ढूंढना है नाकी ऐसे माता–पिता के लिए उपयुक्त बच्चा ढूंढना है जिसका एचएसआर के दौरान साक्षात्कार लिया जा रहा है।*

3. संभावित दत्तक माता–पिता एवं उनके आंकलन को समझने के लिए सुझाई गई कार्य–प्रणाली:

क) माता–पिता का संवेदनशीलता, करुणा, चिंता एवं गैर–आलोचनात्मक मनोभाव वाला दृष्टिकोण हो।

ख) संभावित दत्तक माता–पिता के गोद लेने के निर्णय के उपरांत उन्हें बहुत भावनात्मक मदद की आवश्यकता होती है। व्यग्रता, चिंता, अनिश्चितता, संदेह, अपराधबोध एवं कई ऐसी अन्य भावनाएं होती हैं (जैसे जैविक बच्चा पैदा करने में अक्षम होना या किसी जैविक बच्चे को खोना) उसे व्यक्त करने दें व उस पर चर्चा करें।

West Block-VIII, Wing-II, 2nd Floor, R.K. Puram, New Delhi-110066 (India)
Ph: +91-011-26180194, 26180196, Tollfree: 1800-11-1311, Telefax: +91-011-26180198
E-mail: carahdesk.wcd@nic.in, Website : www.cara.nic.in

ग) उनकी अपनी संतान न होने के बारे में उनकी स्वयं की भावनाओं को समझाने में संभावित दत्तक माता–पिता की सहायता करें। इस बात पर सबसे अधिक जोर दें कि यह अयोग्यता नहीं है बल्कि सामान्य बात है एवं उन्हें परमर्शी प्रक्रिया द्वारा इस पर चर्चा करने व इसे स्वीकार करने में उनकी सहायता करें।

घ) स्वभाव व पोषण की भूमिका समझने में माता–पिता की सहायता करें – उन्हें यह बतायें कि वंश–परंपरा के गुण–दोष व माहौल दोनों ही बच्चे के व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस बात पर जोर दें कि बच्चे को पोषण और खुशनुमा वातावरण प्रदान करने की उनकी योग्यता बच्चे के जीवन में लाभदायक एवं प्रभावी होगीं चाहे जन्म के समय स्वाभाविक गुण कुछ भी रहे हों।

ङ) एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं निर्णय लेने के संबंध में वैवाहिक संबंधों का आंकलन करें, वैवाहिक स्थायित्व का आंकलन करें यह जानने का प्रयास करें कि उनका पारस्परिक रूप से एक दूसरे के प्रति सहयोगात्मक संबंध है। विवाह पर चर्चा के लिए अलग समय दें।

च) पति–पत्नी के बीच संबंधों में कलह के महत्वपूर्ण क्षेत्रों का पता लगाएं एवं यह जानने की प्रयास भी करें उन्होंने अपने मतभेदों को कैसे सुलझाया है (इससे यह अंदाजा होगा कि वे बच्चे का लालन–पालन करने मे टकराव की स्थितियों से कैसे निपटेंगे)।

छ) उनके स्वयं के बचपन व उनके माता–पिता और भाई–बहनों के संबंधों की महत्वपूर्ण बातों पर विस्तार से चर्चा करें।

ज) परिवार के सदस्यों के साथ रिश्ते के बारे में पता लगाएं जैसे कि माता–पिता, पति–पत्नी, भाई–बहन, पारिवारिक मित्र इत्यादि।

झ) यह गृह अध्ययन रिपोर्ट केवल एक दस्तावेज नहीं है जिसमें 'हाँ' और 'नहीं' जैसे उत्तर हों। यह प्रारूप में दिये गये विकल्पों पर केवल टिक न करे एवं हमेशा 'लागू नहीं' जैसे विकल्पों के प्रयोग से बचें। उत्तर पूरी तरह से समझ में आने लायक स्पष्ट व विश्लेषणात्मक हो। रिपोर्ट में संभावित दत्तक माता–पिता की गोद लेने की उत्सुकता एवं उपयुक्तता के बारे में मूल्यांकन भी शामिल हो।

ट) बच्चे के साथ गोद लेने के तथ्य को साझा करने (जिसे प्रकटीकरण कहा जाता है) पर संभावित दत्तक माता–पिता के साथ परिचर्चा गृह अध्ययन रिपोर्ट की तैयारी का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। भले ही ऐसा करना जल्दबाजी लग सकता है परंतु इस बात पर जोर देना अत्यंत आवश्यक है कि माता–पिता के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि वह बच्चे के साथ इस जानकारी को स्वयं साझा करने के लिए कैसे तैयार होगे । इसे बाहरी स्रोत से ,गलती से या असंवेदनशीलता से कभी न होने दें। उन्हें यह समझायें कि एक संवेदनशील माता–पिता का बच्चे के साथ रिश्ता सच्चाई, ईमानदारी व विश्वास पर आधारित होना चाहिए नाकि निरंतर इस डर के साथ की बच्चे को 'पता चल जाएगा' का नहीं हो। यह भी ध्यान दें कि ऐसा खुलासा बच्चे की परिपक्वता व उसकी उत्सुकता के आधार पर उचित समय पर किया जाए। ऐसे स्थिति को संभालने के लिए व्यावसायिक परामर्श सेवा की आवश्यकता पड़ सकती है।

ठ) माता–पिता को इस तथ्य के प्रति तैयार करें कि बच्चे को गोद लेने के बाद के चरण में, बच्चा 'अपने मूल माता–पिता की खोज' की आवश्यकता व्यक्त कर सकता है। उन्हें परामर्श दें कि यह एक उसकी वैध आवश्यकता व बच्चे का अधिकार है तथा उन्हें यह तथ्य भी बतायें कि जेजे अधिनियम में इस तरह की खोज का प्रावधान है। माता–पिता को उनकी चिंताओं व व्यग्रताओं के बारे में परामर्श प्रदान करें।

ड) गृह अध्ययन के दौरान संभावित दत्तक माता–पिता को परामर्श देकर तैयार करें कि उन्हें भेजे गये बच्चे के 'अतीत– को जानना व स्वीकार करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। संभावित दत्तक माता–पिता को यह भी समझायें कि बच्चा एक भावनात्मक, मनौवैज्ञानिक या शारीरिक आघात से गुजरा है उसे धैर्य, समझ व प्यार, देखभाल और स्वीकार्यता की बहुत आवश्यकता होगी। यह उन बच्चों पर भी लागू होता है जो बच्चे गोद की प्रकीया के समय

बड़े होते हैं, पिछली यादें उनके मानस पटल या मन पर गंभीर आघात छोड़ सकती हैं। संवेदनशीलता एवं धैर्य पूर्वक पालन–पोषण, परामर्श एवं अन्य सहायता में यह दिशा–निर्देश सफलतापूर्वक निवारण कर सकता है।

ढ) वह माता–पिता जिनके जैविक बच्चे हैं फिर भी बच्चे को गोद लेने का समझदारी भरा निर्णय लिया है, माता–पिता के साथ बच्चे को गोद लेने एवं माता–पिता को उनके साथ समान व्यवहार करने, उनकी विशिष्ठता व मतभेतदों को स्वीकार करने में माता–पिता की उत्सुकता व बच्चे को गोद लेने की प्रेरणा पर चर्चा करना अत्यंत आवश्यक है। यह उनमें बच्चे को गोद लेने के प्रति अधिक उत्सुकता पैदा करेगी।

ण) यदि माता–पिता ने सिस्टम पर लिंग, आयु अथवा राज्य के अपने विकल्प को बदल दिया है तो इसके कारणों पर चर्चा करें। आदर्श रूप से इसका कारण बच्चे को जल्द से जल्द प्राप्त करने का हीं होना चाहिए बल्कि परिवार में बच्चा कैसे समायोजित हो, ये होना चाहिए।

त) यदि संभावित दत्तक माता–पिता तत्काल प्लेसमेंट वर्ग से बच्चा चुनना चाहता है जबकि उनका पंजीकरण सामान्य रेफरल का है तो संभावित दत्तक माता–पिता की सम्यक जांच व सम्यक मूल्यांकन की आवश्यकता है। गृह अध्ययन रिपोर्ट में इन माता–पिताओं की उपयुक्तता का आंकलन व तत्काल प्लेसमैंट वर्ग से बच्चे चुनने में उनके विकल्प के कारणों का अद्यतन किया जा सकता है।

थ) यह स्मरण रखना नितंता आवश्यक है कि माता–पिता व बच्चे के संदर्भ में बात करते समय व गृह अध्ययन रिपोर्ट लिखते समय हमेशा ''गोद लेने के प्रति सकारात्मक भाषा'' का प्रयोग करें।

द) यह समुचित रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है कि गृह अध्ययन रिपोर्ट तैयार करना गोद लेने की सफलता के प्रति कितना महत्वपूर्ण है। एसएए द्वारा सभी दस्तावेजों का उनकी उपयुक्तता व प्रामाणिकता के लिए अच्छी तरह से जांचा व सत्यापन किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

4. इस परामर्शी सूचना का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया जाए एवं विशेषीकृत दत्तक ग्रहण अभिकरण व जिला बाल संरक्षण एकक के सभी सामाजिक कार्यकत्ताओं को दिया जाय ताकि वे संभावित दत्तक माता–पिता की गृह अध्ययन व गृह अध्ययन रिपोर्ट तैयार करने के दिशानिर्देशों के तौर पर आसानी से इसका उपयोग कर सकें।

संजय

संजय बर्शीलिया
निदेशक, कारा

संजय बर्शीलिया / Sanjay Barshilia
निदेशक / Director
केन्द्रीय दत्तक–ग्रहण संसाधन प्राधिकरण
Central Adoption Resource Authority
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
Ministry of Women & Child Development
भारत सरकार / Government of India
ब्लॉक–8, विंग–2, द्वितीय तल, आर के पुरम
Block-8, Wing-2, 2nd Floor, R K. Puram
नई दिल्ली / New Delhi-110066

No.......................................

Date 03.10.19

ADVISORY

Sub: Guidelines for Preparation of the Home Study Report (HSR) for Adoption and Counselling of Prospective Adoptive Parents (PAPs)

To,
All State Adoption Resource Agencies,
All District Child Protection Units,
All Specialized Adoption Agencies.

Counselling of PAPs and preparation of the HSR is a very sensitive part of the process of Adoption. It is not a question and answer session but a two-way process of information sharing which will prepare the PAPs towards parenthood.

2. Home Study visit is also an opportunity for the SAA to assess the suitability and readiness of the PAPs. Through discussions, the goal is also to help PAPs achieve emotional readiness to parent a child, who is not their biological child. Following are some points to be always kept in mind while doing the home study and writing the report:

a) The preparation of the HSR is to assess suitability and readiness of the PAP for adoption.

b) The challenge for the person preparing the HSR is to go beyond factual information and understand what is visible during the assessment. Ideally, there should be more than one home visit, not just an interview.

c) The first step is "rapport building" and ensuring that the PAPs are ready to engage in a two-way discussion.

d) The Social Worker doing the home study has to maintain a "Child Centric" view all the time. This study is about the needs of the child, not about the needs of the parents. *A suitable family has to be found for a child needing a home; a suitable child is not to be found for parents who are being interviewed during HSR.*

3. Suggested methodology for understanding the PAPs and their assessment:-

a) Approach the parents with sensitivity, compassion, concern and a non-judgemental attitude.

b) After their decision to adopt, PAPs require a lot of emotional support. There is anxiety, worry, uncertainty, doubt, guilt, and several other emotions (like grief at not being able to have a biological child or having lost a biological child) that have to be allowed to be expressed and discussed.

c) Assist the PAPs in understanding their own feelings about childlessness. Emphasise that it is not an inadequacy but a common situation, and help them to positively discuss and accept it through the counselling process.

d) Help the parents to understand the role of nature and nurture – explain that heredity and environment both play an important role in the child's personality. Emphasise that their ability to nurture a child and provide a loving environment will give the child an advantage in life, whatever the natural qualities the child is born with.

e) Assess the marital relationship in terms of respect for one another and decision making, to assess the stability of the marriage and observe if they have a mutually supportive relationship. Put aside the time for discussion on the marriage.

f) Find out key conflict areas in the relationship between the spouses and how they have sorted out the differences in the past (this will give an idea as to how they will deal with conflict situations with the child in parenting).

g) Initiate some discussion on their own childhood and the important dimensions of relationships with their own parents and siblings.

h) Find out about the relationship with members of the family such as parents in law, siblings of spouse, family friends etc.

i) The HSR is not a document that should have answers like "yes and no". It should just not be ticking of options given in the format and options like "not applicable" should be avoided. Answers have to be a descriptive and analytical. Report should include assessment of the PAPs, about their readiness and suitability for adoption.

j) The discussion with PAPs on sharing the fact of adoption with the child (called disclosure) is an important part of HSR preparation. Even though it may seem early to do so, it is necessary to emphasise how critical it is for the parents to be prepared to share this information themselves with the child, and to not let it be revealed accidentally and insensitively by an outside source. Explain that an intimate parent child relationship has to be based on truth, honesty and trust – not constant fear of being "found out". Mention that the disclosure has to be done at the appropriate time based on the maturity and readiness of the child and that further professional counseling may be required later for handling this.

k) Prepare the parents for the fact that at a later stage after adoption, the child may express the need for "root search." Counsel them as to why it is a legitimate need and a right of the child, and the fact that there is a provision for this search in the JJ Act. Counsel the parents about their worries and anxieties over this issue.

l) Prepare the PAPs during the HSR through counselling, that it is very important to understand and accept the "past" of the child referred to them. Help the PAPs understand that the child may have gone through an emotional, psychological or physical trauma and will need a lot of patience, understanding, love, care and acceptance. This applies even more to children who are older at the time of adoption, and who may have past memories that have left a trauma on their psyche. With sensitive and patient parenting, counselling and other support this issue can be addressed successfully.

m) With parents who have biological children and who make a conscious decision to adopt, a discussion is necessary on the motivation to adopt, and the parents' readiness for treating them at par, accepting their uniqueness and differences. This will create a further readiness.

n) If the parents have changed their choices of the gender, age or State on the system, discuss the reasons for it. Ideally, the reasons should not be for getting a child faster, but for how the child will fit into the family.

o) *If PAPs are intending to choose a child from the Immediate Placement category, while keeping on their registration for the normal referral, the PAPs need diligent scrutiny and diligent screening.* The HSR may be updated to assess the suitability of these parents and the reasons for their opting to choose a child from Immediate Placement category.

p) It is necessary to remember to use at all times "positive adoption language" in the context of parents and children while talking and also while writing up the HSR.

q) It cannot be sufficiently emphasised as to how critically important the HSR preparation is in the success of an adoption. All documents need to be thoroughly checked and verified for their appropriateness and authenticity, by the SAA.

4. This advisory may be translated in the regional languages and given to all the social workers of the SAAs and the DCPUs for using it as guidelines for the Home Study of the PAPs and preparation of the HSR.

Sanjay Barshilia
Director, CARA

संजय बर्शीलिया / Sanjay Barshilia
निदेशक / Director
केन्द्रीय दत्तक–ग्रहण संसाधन प्राधिकरण
Central Adoption Resource Authority
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
Ministry of Women & Child Development
भारत सरकार / Government of India
पश्चिमी खण्ड–8, विंग–2, द्वितीय तल, आर.के. पुरम
West Block-8, Wing-2, 2nd Floor, R.K. Puram
नई दिल्ली / New Delhi-110066